RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जनसंचार के सामाजिक संदर्भ

डॉ. अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, एस. बी. कॉलेज, शहापुर, जिला ठाणे, महाराष्ट्र 421601

वर्तमान युग संचार क्रांति का युग है। आज के परिवेश में जीवन की गति अत्यंत तीव्र हो गई है, परिवर्तन भी बड़ी तीव्र गति से घट रहे हैं। मानव आज जिस परिवेश में रह रहा है उस परिवेश, उस शहर और देश-विदेश के समाचारों, बीती रात की खबरों, बदलाव आदि की जानकारी पाने हेतु वह समाचार को जानने के लिए काफी उत्सुक रहता है। मनुष्य की इस आवश्यकता को आज जनसंचार माध्यम बखूबी पूरा कर रहे हैं। जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुत समाचार व्यक्ति की उत्सुकता को न केवल शांत करता है अपितु नित्य-नूतन घटनाओं की जानकारी को हमें विभिन्न माध्यमों द्वारा प्रदान किए जाने वाले समाचारों से अवगत कराता है। समाचार माध्यम, व्यक्ति विशेष के लिए नहीं बल्कि उन श्रोताओं और दर्शकों के लिए कार्यान्वित होता है जिन्हें उन घटनाओं और समस्याओं को जानने की जिज्ञासा होती है। वह नित्य-नूतन घटनाओं को जानना चाहता है जो उसके लिए नई हों और विश्वसनीय भी। जानकारी देना वा लेना मानवीय स्वभाव का विशेष पहलू है। मनुष्य की जिज्ञासु प्रवृत्ति, उसे मीलों दूर घटी घटना के विषय में जानने को बाध्य करती है।

आदिम युग से ही उसने अपनी जिज्ञासा शमन के अनेक उपाय खोज लिए थे। सभ्यता के विकास के साथ-साथ यह उपाय विकसित होते चले गए। नगाड़े की ध्वनि, राजाज्ञा, शिलालेख आदि से होती हुई यह यात्रा मुद्रण कला तक जा पहुंची और समाचार पत्र अस्तित्व में आए। समाचारों में सूचना के महत्व को व्यापक और सार्वजनिक कर दिया। ज्ञान-विज्ञान की प्रगति ने सूचना और संचार माध्यमों की एक नवीन श्रृंखला प्रस्तुत की। नि:संदेह रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, टेलीफोन, इंटरनेट और मल्टीमीडिया आदि सूचना के आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, किंतु समाचार पत्रों का महत्व ज्यों का त्यों है। सूचना तकनीकी के इस युग में समाचार पत्र जनमत के प्रतिनिधि हैं। घटना की सूचना देने के अलावा वे उसकी व्याख्या और विश्लेषण में रुचि लेते हैं। यद्यपि यह कार्य टीवी पर दिखाए जाने वाले न्यूज़ चैनल भी कर रहे हैं किंतु उन्हें विशेष क्षण में ही देखा या सुना जा सकता है। समाचार पत्रों में समाचार ही सबसे अहम तथ्य बनकर उभरता है। अब प्रश्न यह उठता है कि समाचार क्या है ? इसकी व्यापकता क्या है और यह जनमानस को किस तरह प्रभावित करता है ? समाचार शब्द की व्युत्पत्ति 'सम -आड़ - चर - घंच' से हुई है। जिसका अर्थ है सम्यक रूप से बिना किसी भेदभाव के तथ्यों की सही जानकारी देना समाचार कहलाता है। अंग्रेजी के NEWS को हिंदी में 'समाचार' कहा जाता है। News शब्द में N - नॉर्थ, E - ईस्ट, W - वेस्ट, S - साउथ अर्थात चारों दिशाओं में घटित होने वाली नवीन घटनाएं आदि समाचार हैं।

सूचना अर्थात समाचार की कई परिभाषाएँ हैं जिन्हें विचारकों और विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। विलियम एस. माल्सबाई के अनुसार, "किसी समय पर होने वाले उन महत्वपूर्ण घटनाओं के सही और पक्षपात रहित विवरण को 'समाचार' कह सकते हैं जिसमें उस पत्र के पाठकों की अभिरुचि हो जो उन्हें प्रकाशित करता है।" जे.जे. सिंडलर का मत है कि, "पर्याप्त संख्या में मनुष्य जिस बात को जानना चाहें वही समाचार है। शर्त यह है कि वह बात सुरुचि तथा प्रतिष्ठा का उल्लंघन न करती हो।" पालव्हाइट की दृष्टि में "दिलचस्पी की किसी ऐसी घटना के संबंध में सद्य: निरूपित तथ्यों का प्रकाशन समाचार कहलाता है जो हुई हो, हो रही हो या होने वाली हो, अथवा आशा के विपरीत किसी कारण न हो पाए।"

चिल्डन बुथ की दृष्टि में "समाचार सामान्यतः वह उत्तेजक सूचना है जिससे कोई व्यक्ति चमत्कृत हो सकता है।"

डॉ.हरिमोहन के अनुसार, "समाचार नवीनतम घटना अथवा कथन आदि का ऐसा ज्ञानवर्धक विवरण है जो महत्वपूर्ण, रोचक, उत्तेजक तथा परिवर्तन का सूचक है।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाचार नित, नूतन परिवर्तन व समसामयिक घटनाओं, अनजान तथ्यों आदि से न केवल अवगत कराता है बल्कि उन सबकी विस्तृत जानकारी भी प्रदान करता है। दूरदर्शन के प्रवेश ने मीडिया के सभी क्षेत्रों का कायाकल्प कर दिया है। टेलीविजन के विस्तार ने जहां कुछ क्षेत्रों में प्रगति की है, वहीं कुछ क्षेत्रों में असंतुलन भी पैदा कर दिया है। जावरीमल्ल पारख की मान्यता है कि "टेलीविजन विस्तार योजना का महत्वपूर्ण अंग है। व्यवसायिक प्रसारण का आरंभ टी.वी. पर प्रायोजित कार्यक्रमों के आरंभ ने जहां उसे दर्शनीय और लोकप्रिय बनाया, वहीं शिक्षा और सूचना प्रदान करने की उसकी भूमिका मनोरंजन की तुलना में गौण होती गई। टेलीविजन चैनलों पर विज्ञापनों और सीरियलों के प्रसारण से उद्योगपतियों को अपना उत्पादन बेचने का ऐसा माध्यम मिल

RRIJM 2015, All Rights Reserved

गया है जो अन्य किसी माध्यम की तुलना में कहीं अधिक कारगर साबित हो रहा है।"

समाचार लेखन और प्रस्तुतीकरण अपने आप में एक महत्वपूर्ण कला है। रोचक और कुतूहल युक्त जानकारियां समाचार को प्रभावी बनाती हैं। रोचक समाचार न केवल श्रोता या दर्शक में समाचारों को जानने हेतु न केवल विशेष रूचि पैदा करते हैं बल्कि विचारों, भावनाओं और परिणामों पर भी प्रभाव डालते हैं। प्रभावी एवं रुचिकर समाचार, जो निरंतर परिवर्तन की जानकारी देते रहते हैं उनमें नवीनता, निकटता, प्रभाव, जनरुचि, संघर्ष, विविध जानकारियां, महत्वपूर्ण लोग, अनोखापन, दर्शक वर्ग, नीतिगत ढांचा जैसे महत्वपूर्ण तत्वों का होना नितांत आवश्यक है। इन तत्वों से युक्त समाचार ही श्रोताओं और दर्शकों को पूरी तरह से न केवल प्रभावित करते हैं अपितु उनके परिणामों से भी अवगत कराते हैं।

पाश्चात्य विद्वान रूडयार्ड किपलिंग की दृष्टि में समाचार में अंग्रेजी के पांच डब्ल्यू (W) और एक एच (H) जैसे What, Where, When, Who, Why और How अर्थात क्या, कहां, कब, कौन, क्यों, कैसे का होना अत्यंत आवश्यक है। 'सत्य' समाचार का प्राणतत्व है - यदि समाचार में सच्चाई है तो वह श्रोताओं और दर्शकों को समाचार से जोड़े रखता है और जन समुदाय में उत्सुकता भी बनाए रखता है।

दूरदर्शन पर घटना या समाचार के प्रस्तुतीकरण का अपना एक अनूठा तरीका होता है। समाचार को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि न देखने वाला दर्शक भी उन घटनाओं को जानने हेतु दिलचस्पी लेने लगे। यह बहुत कुछ न्यूज़ एडिटर पर भी निर्भर करता है कि वह समाचार को कितने प्रभावी और रोचक तरीके से अपने संवाददाता से बातचीत कर घटना या समाचार की तह में जाकर वस्तुस्थिति से दर्शकों को अवगत कराने में सफल होता है। समाचार में तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता और संतुलन का होना अति आवश्यक है।

दूरदर्शन पर प्रसारित समाचारों में सनसनीखेज खबरें सबसे रोचक होती हैं। हर कोई ऐसे समाचारों में रुचि लेता है। ऐसे में उन समाचारों का मुख्य हेतु उसके कारणों, परिणामों और गतिविधियों से न केवल सूचित करना होता है बल्कि उसे शिक्षित करना भी होता है। कई बार यह भी देखा जाता है कि एक घटना या समाचार, एक चैनल पर काफी विस्तार से दिखलाया जाता है। आवश्यक नहीं है कि वही समाचार या घटना दूरदर्शन के अन्य चैनल वाले भी उसी रोचकता से दिखलाएं। यह भी हो सकता है कि वह समाचार उस चैनल के लिए कोई मायने ही न रखता हो। उदाहरण हेतु जया बच्चन ने एक फिल्म-रिलीज होने वाले कार्यक्रम में यह कहा था कि "मैं हिंदी भाषी हूँ और हिंदी में ही अपनी बात कहूंगी।" दूरदर्शन समाचार चैनलों ने इस सहज बात को अनावश्यक तूल देते हुए इस ढंग से बार-बार टी.वी. पर परोसना प्रारंभ किया जिससे कुछ लोग इसका कुछ और ही अर्थ निकालने लगे। बात क्षेत्रवाद, भाषावाद, प्रांतवाद के रूप में फैल गई बात और अधिक तूल न पकड़े इसलिए बड़ी होशियारी से बिग-बी अमिताभ बच्चन ने घर के मुखिया के नाते क्षमा मांग ली। वहीं कुछ टी.वी. चैनलों ने इस प्रसंग को कोई महत्व नहीं दिया।

दूरदर्शन पर समाचारों के प्रस्तुति का स्वरूप हर चैनल का अनूठा होता है। नाटकीयता और चित्रात्मकता समाचार को विश्वसनीय और महत्वपूर्ण बना देते हैं। अधिक से अधिक कैमरा कवरेज किसी भी समाचार को बहुत कुछ न कहते हुए भी काफी कुछ कह देता है। इन चित्रों को दर्शक देख कर उनके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु उत्सुक रहता है। दूरदर्शन पर समाचारों की प्रस्तुति कलात्मक होनी चाहिए। डॉ0 अर्जुन तिवारी ने संवाद की प्रस्तुति की महत्ता को बताते हुए ठीक ही कहा है, "टी.वी. के समाचार वाचक को हम मात्र वाचक ही नहीं मानते, उन्हें तो News Presenter भी कहते हैं। समाचार वाचक ऐसा कुशल अभिनेता होता है जो दूरदर्शन के पर्दे पर Motion Picture Play, Variety Show अथवा Stage Play का देदीप्यमान नायक बनता है। वह समाचार को प्रदर्शन योग्य बनाता है। वह व्यक्तिगत रिपोर्टिंग, समाचार-लेखन-शैली, विविध संवादों की क्रमबद्धता, चित्रात्मकता द्वारा प्रभावपूर्ण प्रस्तुति पर विशेष जोर देता है। वाचक का व्यक्तित्व उसकी वाणी का उतार-चढ़ाव एवं समाचार-वाचन की शैली समाचार को जीवंत बनाती है। वाचक के मुस्कराने, आंख झपकने और भौहों के तानने का दूरदर्शन समाचार पर वही प्रभाव पड़ता है, जो समाचार पत्रों के संवाद में सम्मति जोड़ने का होता है। टेलीप्रॉम्पटर और संकेतपट्ट समाचार को व्याख्यायित करने में महत्वपूर्ण होते हैं। वाचक और नियंत्रण कक्ष के मध्य मंच प्रबंधक संपर्क सूत्र का कार्य करते हैं। समाचार के सारथी समाचार वाचक सामान्य आदमियों के लिए समाचार निर्माता, प्रस्तुतकर्ता, संपादक सभी कुछ होता है।"[3]

समाचारों को संकलित करते समय भी इस बात पर विशेष बल दिया जाना चाहिए कि दूरदर्शन पर समाचारों को देखकर उन्हें जानने की ललक पैदा हो, इसलिए उन समाचारों में तथ्यों का ब्यौरा व वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए व्यवस्थित ढंग से प्रसारित किया जाना चाहिए। अतिशयोक्तिपूर्ण या बढ़ा-चढ़ाकर समाचारों को प्रसारित कर देने से चैनल की साख बढ़ने के बजाय धीरे-धीरे घटने लगती है।

दूरदर्शन के समाचार चैनलों ने बोरवेल में गिरे प्रिंस को गढ़े से बाहर निकाले जाने तक के विस्तृत समाचार को प्रसारित किया। हर समाचार चैनल अपने ढंग से जीवन और मृत्यु के बीच जूझ रहे प्रिंस व सेना के क्रियाकलाप को पूरी सजीवता से प्रसारित करने में लगा था। नोएडा का चर्चित हेमराज और आरुषि हत्याकांड भी महीनों दूरदर्शन के समाचार चैनलों पर हर दिन नई-नई सनसनीखेज

RRIJM 2015, All Rights Reserved

खबरों को परोसता रहा। दो दिन पूर्व से ही चैनल पर घोषित किया जाता था। कल रात ठीक 9 बजे देखिए हेमराज और आरुषि हत्याकांड का सुराग, किस तरह आरुषि और हेमराज की धारदार हथियार से हत्या कर दी गई। इसी तरह इस हत्याकांड से जुड़ी हर दो-तीन दिन के बाद कोई न कोई नई खबर दूरदर्शन के समाचार चैनल प्रसारित करते रहे। महीनों खोजबीन और बयानबाजी के बावजूद भी हमारी सी.बी.आई. और पुलिस विभाग इस हत्याकांड के मुख्य आरोपी को पकड़ने में नाकाम रहे। आज उस हत्याकांड की सुध-बुध किसी भी समाचार टी.वी. चैनल वालों को नहीं है। जनता भी धीरे-धीरे इन्हें मानो भूल चुकी है। यह समाचार अब बासी हो गया है, सभी की उत्सुकता भी समाप्त हो गई है।

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले समाचारों के विभिन्न विषय होते हैं, जैसे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, खेल समाचार, सिनेमा जगत, संसद, अदालती, व्यवसायिक, अपराध और दुर्घटनाओं से जुड़े समाचार। इन समाचारों का प्रस्तुतीकरण एक जैसा नहीं होता। अंतरराष्ट्रीय स्तर के समाचार - तेहरान, लगभग 170 यात्रियों को लेकर जा रहा रूस निर्मित एक यात्री विमान उड़ान भरने के तुरंत बाद राजधानी के पश्चिमोत्तर भाग के एक खेत में दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद मलबे में तब्दील हो गया। विमान पर सवार सभी यात्रियों की मृत्यु हो गई। अज्ञात प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि विमान का पिछला हिस्सा हवा में जलने लगा और विमान ने इस प्रकार गोता लगाया मानो वह एक स्थान पर उतरना चाहता हो, विमान छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। आपात सहायता कर्मी तथा प्रत्यक्षदर्शी विमान के मलबे में से शवों को निकाल रहे हैं।

समाचार चैनल हर समाचार की प्रस्तुति घटना-प्रसंग, उनके परिणामों आदि पर लोगों की राय व टिप्पणी को प्रसारित करते हैं। देश विदेश से जुड़ी खबरों के अतिरिक्त स्थानीय समाचार को भी विशेष महत्व दिया जाता है, जैसे बिजली दर की बढ़ोतरी को लेकर शिव सैनिकों द्वारा किए गए आंदोलन और विरोध के आगे ऊर्जा मंत्री को निर्णय लेना पड़ा। टीवी पर यह समाचार प्रसारित किया गया कि "बिजली दर में नहीं होगी वृद्धि" बिजली बोझ से उपभोक्ताओं को राहत। महंगाई की मार, आसमान छूते भाव, दाल-रोटी खाओ नेताओं के गुण गाओ। बढ़ती महंगाई ने आम आदमी का जीना दूभर कर दिया है। इस समाचार की प्रस्तुति को देखा जा सकता है "यह देश है मेरा", मुंह का निवाला छीनती महंगाई, गेहूं के साथ पब्लिक भी पिसती है। आम जनता भूखमरी से गुजर रही है। आकाश जिंदल (व्यवसाई) की राय जानना चाहेंगे - आकाश जिंदल - पेट्रोल डीजल के भाव बढ़ने से महंगाई बढ़ गई है। अब हम अहमदाबाद के हमारे संवाददाता दीपक से जानना चाहेंगे दीपक - अहमदाबाद में आटे का क्या भाव है ? दीपक - यहां ज्यादातर लोग गेहूं खरीदकर रख लेते हैं। यहां गेहूं के भाव में ज्यादा उछाल नहीं है फिर भी आम जनता को 22-23 रुपए किलो के भाव से आटा खरीदना पड़ता है। रोटी ही आम जनता की भूख मिटाती है। देखिए रोटी आज कितनी महंगी हो गई है - "यह देश है मेरा"

दूरदर्शन पर महत्वपूर्ण और मशहूर जाने-माने फिल्मी सितारे, क्रिकेटर, मंत्रियों आदि से जुड़े समाचारों को भी बार-बार प्रसारित किया जाता है। अमिताभ बच्चन का बीमार होना, सलमान खान के विवाह की खबर, राखी सावंत आज इस मुकाम तक कैसे पहुंची, उनका जीवन कैसा है, विभिन्न मुद्दों पर उनके क्या विचार हैं ? प्रायः देखा गया है कि मशहूर और जाने-माने लोगों के विषय में जानकारी प्रदान करने के नाम पर कोरी अफवाहें और अतिशयोक्तिपूर्ण मसालेदार बातें ही प्रसारित की जाती हैं। विद्या बालन क्रिकेटर जहीर पर फिदा हुई। इमरान-श्रुति के बीच कुछ तो है, गोरे रंग के लिए एसिड ट्रीटमेंट करा रहे थे जैक्सन। इस प्रकार हम देखते हैं कि दूरदर्शन पर प्रस्तुत किए जाने वाले समाचारों में कुछ दोष भी होता है। आपराधिक और यौन वासनाएं व विभिन्न प्रकार के कुकृत्य के समाचारों को प्रदर्शित कर पता नहीं चैनल वाले कौन सा हित साधने में तल्लीन रहते हैं। आवश्यकता है उन दोषों का परिहार कर समाचार को वास्तविक रूप में ही प्रसारित किया जाए, जिससे सामाजिक परिवर्तन की सूचना मिले और नवीन उपलब्धि से भी अवगत होते रहें।

किसी भी घटना, विचार या समस्या को समाचार बनाने के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह नवीनता लिए हुए हो। उन समाचारों में लोगों की दिलचस्पी हो। समाचारों का दूरदर्शन चैनलों पर प्रस्तुतीकरण इस प्रकार हो कि लगे यह आम आदमी की समस्या है। उसमें समाज का प्रतिबिंब झलकता हो। समाचारों का प्रस्तुतीकरण प्रेरक, प्रभावी जनरुचि और उपयोगी जानकारियों से लैस होकर वह घटना, कवरेज क्षेत्र, दर्शक-श्रोता के ज्यादा से ज्यादा करीब हो। यही सच भी है कि लोग उन्हीं घटनाओं को जानने हेतु ज्यादा से ज्यादा उत्सुक होते हैं, जो हमारे जीवन का सच हो। इस संदर्भ में डॉ0 अर्जुन तिवारी ने ठीक ही कहा है, "दूरदर्शन पत्रकार, शिक्षक और विकास अभिकर्ता होता है।" वह ऐसा शिक्षक है जो भौतिक वातावरण को बदलने के साथ-साथ मानव मन की आंतरिक कलियों को विकसित करता है। इस मनोरंजन, सूचना और शिक्षा परक जनमाध्यम का भविष्य अपने राष्ट्र में समुज्ज्वल है। यद्यपि कुछ लोग इसे सत्ता-दर्शन, दुष्ट-दर्शन, भ्रष्ट-दर्शन कह देते हैं परंतु राष्ट्र की पचहत्तर प्रतिशत जनता का सच्चा हमदर्द दूरदर्शन जैसा शक्तिशाली इलेक्ट्रॉनिक मीडिया है, जिससे जनमानस का उन्नयन हो रहा है। अपने भीमकाय विस्तार के साथ दूरदर्शन सूचना-संदेश पहुंचाकर जनमत निर्माण में क्रांतिकारी भूमिका निभा रहा है।"[4]

टीवी चैनलों के समाचार में नवीनता सहजता और कौतूहलता का समावेश भी अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुतीकरण में भी ज्यादा से ज्यादा लोगों की रूचि, हृदयस्पर्शी विचार आदि गुणों

से युक्त समाचार सही समय पर रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाए तो वह काफी प्रभावी होगा। बशर्ते अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध कुछ न दिखलाए व प्रसारित करें। इसीलिए ठीक ही कहा गया है "हर घटना समाचार नहीं है। केवल वही घटना समाचार बन सकती है जिसका कमोबेश सार्वजनिक महत्व हो।"[5] अतः दूरदर्शन समाचार चैनलों पर समाचारों की प्रस्तुति इस तरह हो कि उनमें नकारात्मक दृष्टिकोण पनपने के बजाय सामाजिक परिवर्तनों के प्रति सकारात्मकता पैदा हो व आम जन-जीवन की समस्याओं से निजात दिलवाए तथा जनता को जागरूक करें। जनसंचार माध्यमों के संदर्भ में वर्तमान समय में यह भी अनिवार्य रूप से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है कि समाचारों का स्वरूप इस ढंग से निर्मित किया जाए कि सामाजिक ढांचे में दरारें पड़ने की संभावनाएं न रहें। भारत जैसे सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील देशों में इस बात को अनिवार्य रूप से याद रखने की आवश्यकता है।

संदर्भ :

1. हिंदी पत्रकारिता उद्भव और विकास - रचना भोला यामिनी; पृष्ठ 71
2. जनसंचार के सामाजिक संदर्भ - जावरीमल्ल पारख; पृष्ठ 32
3. जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी; पृष्ठ 117
4. वही; पृष्ठ 118
5. साहित्य अमृत –फरवरी,2006
6. सिर्फ समाचार –धनंजय चोपड़ा
7. आधुनिक जनसंचार और हिंदी – डॉ. हरिमोहन
8. टीआरपी टीवी न्यूज और बाजार –डॉ. मुकेश कुमार

RRIJM 2015, All Rights Reserved